भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव

शिवाली त्रिपाठी, प्रभात रंजन सिंह

शोधार्थी
राजनीतिशास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

सारांश- भारत भूमि महान भूमि है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित ज्ञान तथा पाश्चात्य जगत से आ रही तथाकथित नवीन खोज, जो हमारे ग्रंथों में पहले से ही अल्लेखित हैं, भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धशाली होने का प्रमाण देती है। संपूर्ण भारतीय ज्ञान प्रणाली व संस्कृति ऐसे अनंत सत्य से पूर्ण हैं, जो पूर्णमदः पूर्णमिदं की बाद करती हैं।

भारत में विश्व को संस्कृति दी जब 5000 साल पहले कई सभ्यताएँ केवल खानाबदोश व यायावर जीवन यापन करती थी, तब भारतवर्ष में सिंधु घाटी सभ्यता में हड़प्पा संस्कृति का जन्म हुआ। विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला में स्थापित हुआ। चौथी शताब्दी ई०पू० में स्थापित नालंदा शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। भारत ने विश्व को देव भाषा संस्कृत दी जो कि विश्व की सबसे शुद्धतम एवं उपयुक्त भाषा है।

"संस्कृत सभी यूरोप भाषाओं की जननी है। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा हैं.फोर्ब्स पत्रिका की रिपोर्टए जुलाई 1987।

भारतवर्ष ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर सभ्यता व ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन किया है और अनवरत रूप से करता ही जा रहा है। भारत ने विश्व को सनातन धर्म व बौद्ध, जैन और सिख पंथ दिए। भारत ने विश्व संस्कृति को गुरू-शिष्य परंपरा दी। भारतीय संस्कृति व ज्ञान का वैश्विक पटल पर प्रभाव ही कहेगें जो तनाव प्रबंधन, स्थिरता, जीवन कौशल व आत्मिक शांति के लिए विश्व भारत के ज्ञान की तरफ उन्मुख हो रहा है। भारत की सभ्यता व संस्कृति ज्ञान के प्रभाव का अनुमान हम रूस व अमेरिका की सड़कों पर हरे रामा हरे कृष्णा का जयघोष करते विदेशीजनों व भारत के प्रख्यात मंदिरों में दूर-दूर से आए विदेशी श्रद्धालुओं की भक्ति को देख कर लगा सकते है। विश्व किस प्रकार हमारे ज्ञान व हमारी संस्कृति में स्वयं की शांति व जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर रहा है। अब हम सभी का यह कर्तव्य बनता है कि भारत वर्ष की इस अनमोल धरोहर, ज्ञान व संस्कृति का संवर्द्धन व पोषण करके रखे जिससे कि विश्व का कल्याण हो सके और आने वाली पीढ़ी भारत को विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित प्राप्त कर सके।

कीवर्ड- भारतीय ज्ञान परंपराए वैश्विक संस्कृतिए आत्मिक शांति।

भारतीय ज्ञान का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव

भारत, संस्कृति और ज्ञान आध्यात्म की परंपरा मात्र शब्द नहीं अपितु प्रत्येक भारतीयों के भाव हैं। भारतवर्ष के लिए कहा गया हैं - **"देवतानां प्रियं धाम तवाप्यास्ति ममापि च।"** अर्थात यह भारत भूमि

देवताओं के साथ-साथ हम सभी की अति प्रिय भूमि है। और जब इस भारत भूमि की प्रतिष्ठा की बात आती हैं, तब पंक्ति उद्धृत होती है-

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वेसंस्कृते संस्कृति: तथा" अर्थात् भारत की दो मूल प्रतिष्ठा है पहली संस्कृत और दूसरी संस्कृति, जो कि एक दूसरे के पूरक है। आज हम देखते है कि संस्कृत जो हमारी भाषा ही नहीं अपितु देवभाषा है, का अध्ययन विश्व के बड़े-बड़े देशों में जोर शोर से हो रहा है। विलियम जोन्स ने संस्कृत को 'मदर ऑफ ऑल लैंग्वेज' की संज्ञा दी है। यह हमारी संस्कृति व ज्ञान की परंपरा का वैश्विक प्रभाव ही है। पुरातन से लेकर आधुनिक काल तक हम विश्व व्यवस्था में अपनी ज्ञान परंपरा से संवर्द्धन ही करते आए हैं। अतः नई शिक्षा नीति में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को स्वीकारिता देकर शिक्षा को हमारे गौरवशाली अतीत से जोड़ने का कार्य किया गया है।

वर्तमान में मोदी जी के प्रयासों से भारतीय ज्ञान परंपरा की अनुपम थाती योग, आज अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त कर विश्व भर में लोकप्रिय हो रहा है। विश्व समुदाय योगा कहकर ही सही, भारतीय संस्कृति के इस अद्वितीय आरोग्य विधान को अंगीकृत करने में लगा हुआ है। कोविड काल में भारत सहित विश्व के अनेक देशों के लिए योग कितना बड़ा सहारा बनकर सामने आया था यह हम देख चुके हैं। इसी दौर में शारीरिक दूरी के कारण जब हाथ मिलाने में बाधा आई तो कई वैश्विक नेताओं को अभिवादन हेतु हाथ जोड़कर नमस्ते करते भी देखा गया। यही हमारी संस्कृति का वैश्विक पटल पर प्रभाव है। भारतीय संस्कृति की अनाक्रमण की नीति, भारत की ज्ञान परंपरा का अंग वेद, पुराण, शास्त्र उपनिषद् और विदेशों में रह रहे अनिवासी भारतीय हमारी ज्ञान व संस्कृति की छाप वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित कर रहे हैं। यह भारत के वैश्विक प्रभाव का संवर्द्धन ही है। भारत में आयोजित जी.२० के माध्यम से दुनिया भर में भारत ने वसुधैव कुटुंबकम् के भारतीय दर्शन द्वारा विश्व को एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य की राह दिखाई है। जलवायु परिवर्तन से लेकर प्रत्येक प्रकार के संकट में विश्व का ध्यान भारतीय ज्ञान व कौशल पर ही जाता है। महर्षि अरविंद का कथन है- "विश्व की ऐसी कोई समस्या नहीं हैं जो भारत में न हो और मैं मानता हूँ कि इन सारी समस्याओं का समाधान भी भारत से ही निकलेगा।" ळ.२० के पर्यावरण व जलवायु मंत्रियों की बैठक को संबोधित करते हुए महान कवि तिरुवल्लुवर के बहाने भारत की इस परंपरागत सीख का उल्लेख किया कि न तो नदियाँ अपना जल स्वयं ग्रहण करती हैं और न ही वृक्ष अपने फल स्वयं खाते हैं, बादल भी अपने जल से उत्पन्न होने वाले अन्न को नहीं खाते । इस रूप में आज भारतीय ज्ञान विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ रहा है।

वर्तमान की अद्वितीय खोजों की बात करें हो हिग्स बोसान, जिसे गॉड पार्टिकल कहते हैं, की खोज में भारत के वैज्ञानिक सत्येन्द्रनाथ बोस जी का ही योगदान है। हिग्स बोसान की खोज जिस प्रयोगशाला में हुई उसका नाम सन लेबोरेटरी है। सन लैबोरेट्री के प्रांगण में नृत्य करती हुई भगवान शंकर की नटराज की प्रतिमा स्थापित है, जिसके नीचे आस्ट्रियन वैज्ञानिक फिट्ज जे कैपरा का कथन लिखा हुआ हैं कि "छवू जीम ेबपमदबम ीं बवउम जव जीम बवदबसनेपवद जींज जीम बवदेपेजमदज चमतचमजनंस बतमंजपवद ंदक कमेजतनबजपवद वि नदपअमतेम पे सपाम जीम बवेउपब कंदबम वी पअंण्श

यह भारत के ज्ञान के विस्तार को प्रदर्शित करने के लिए एक अंश मात्र है। 1893 के स्वामी विवेकानंद जी के भाषण से लेकर अब तक भारत के ज्ञान व संस्कृति की छाप वैश्विक संस्कृति पर अमिट रूप से बनी हुई है। आवश्यकता है तो केवल भारतीयों को अपनी ज्ञान परंपरा व स्व की

भावना को जगाने की। हमारी ज्ञान परंपरा में हनुमान जी जैसा बल विद्यमान हैं परंतु हम ही उसे विस्मृत किए बैठे हैं, आवश्यकता है तो उसका स्मरण करने की।

भारत और भारत की ज्ञान परंपरा का चिरकाल से विश्व की सभ्यता एवं संस्कृति पर अमिट छाप रही है। हम ध्यान से देखें तो विश्व के प्रत्येक स्थान पर हमें भारत की उपस्थिति के प्रमाण प्राप्त हो जाएँगे। विश्व की संस्कृति को भारत की ज्ञान परंपरा ने सदैव से समृद्धशाली किया है। प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग-अलग देश के रूप में माना ही नहीं।

"अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानामं तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

महाउपनिषद् के इस सिद्धांत पर भारत संसार को एक परिवार मानता है। हम किसी भी देश में जायें, भारतीय ज्ञान व संस्कृति वहाँ विराजमान है। अतीत की बात करें तो स्कंद के पुत्र के नाम से स्केन्डेनेविया कहलाया और उसका जो एकदम अंतिम शिखर है वहाँ उपासना का एक स्थल है, जिसे उपसला कहकर पुकारते हैं। कश्यप ऋषि की पत्नी दिति से दैत्य हुए, दनु से दानव और दनु के ही नाम पर डेन्यूब नदी बनी। जब वो नीचे की तरफ आई तो रमणीय से रोमानिया बन गया ऋषि से रशिया बना और इसके और नीचे आएँ तो गांधार का कंधार हो गया। अपगढ़ अफगानिस्तान में बदल गया और श्रीलंका तो सदैव से ही भारत का भाग रहा है। काष्ठमण्डप, काठमांडू हो गया, मलयाचल के झोंके से आता हुआ मलेशिया बना. और जो निपुड़ था, वो निप्पोन में बदल गया, जो आज भी जापान के नाम से जाना जाता है। समस्त विश्व पर भारत की वैचारिक एवं सांस्कृतिक विरासत की छाप आदिकाल से विद्यमान है क्योकि संपूर्ण विश्व कभी न कभी भारत का ही अंग रहा है। अमेरिका में माया सभ्यता, द. अमेरिका में इंका सभ्यता, सिंधु सभ्यता आदि का प्राप्त होना विश्व में भारत की प्राचीन काल से चली आ रही विचार, संस्कृति व ज्ञान की परिपाटी की द्योतक है।

यह भारत की संस्कृति का वैश्विक प्रभाव ही है कि विश्व के दो सबसे विशाल हिंदू मंदिर भारत में न होकर विदेश की धरती पर है। अबू धाबी में भारतीय मंदिर की स्थापना का होना भारत के ज्ञान व संस्कृति के प्रभाव की पराकाष्ठा ही है। एक तरफ अमेरिका के जार्जिया में अक्टूबर को हिन्दू माह घोषित किया गया, दीवाली के दिन को सरकारी अवकाश घोषित करने का नियम बनाया, विश्व के प्रत्येक स्थान पर राम मंदिर उद्घाटन की गूंज और हिंदू त्यौहारों को जोश व उमंग के साथ मनाना विश्व पर भारत की संस्कृति व ज्ञान की झलक ही है।

जापान के देवता हैं हाइकोकुटेन, जिन्हें भैरव का प्रतीक माना जाता। ऐसे ही जापान में देवी हैं बेंजाइटन, जिन्होने हाथ में वीणा ली हुई है और कमल पर विराजित है। इंडोनेशिया की बात करें तो ग्रीक शब्द नीसिया का अर्थ होता है द्वीप और इंडो का अर्थ होता है भारत अर्थात् भारतीय द्वीप । यदि उत्तर में जाए तो मंगोलिया की संसद के ऊपर एक बहुत बड़े घोड़े की प्रतिमा लगी है। यह घोड़े की प्रजाति वहाँ की सबसे अच्छे घोड़े की प्रजाति मानी जाती है, जिसका नाम कनथक है। जिस प्रकार महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम चेतक था ठीक उसी प्रकार भगवान बुद्ध के घोड़े का नाम था कनधक। सिद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान व संस्कृति की विश्व में व्यापकता है।

वर्तमान समय में प्रमाण की बात करे तो यह भारत के ज्ञान का विश्व पर प्रभाव ही है कि योग दिवस के अनुमोदन के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के १७३ देशों के भारत के इस प्रस्ताव का समर्थक मात्र ही नहीं बने

अपितु अनुमोदक की भूमिक का भी निर्वहन किया। विश्व की किसी भी सभ्यता व संस्कृति का विश्व पर इतना सकारात्मक प्रभाव नहीं है, जितना भारत के ज्ञान व संस्कृति का है। कहीं भी संसार में ऐसा कोई धर्मग्रंथ नहीं मिलता जिसमें स्वास्थ्य संबंधी बातें लिखी हों और वो केवल कही सुनीं न होंए अपितु अनुभूत की जा चुकी है।

आधुनिकीकरण की दौड़ से विश्व को यह समझ आ गया हैं कि केवल धन, सुख-सुविधा, अच्छी नौकरी, और एक शानदार जीवन ही व्यक्ति का परम लक्ष्य नहीं है। भारत के वेद, पुराण, उपनिषदों के ज्ञान के भंडार व संस्कृति में विश्व के लोग स्वयं के जीवन का लक्ष्य व शांति की खोज में आते हैं।

निष्कर्ष-

ऋगवेद में कहा गया है- **"आ नो भद्रा: क्रतवो यंतु विश्वतः"** अर्थात् हर दिशा से सात्विक विचार हमारी तरफ आने हो। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता को पूरा विश्व अनुभव कर रहा है। मैकाले के मानस पुत्र प्रश्न उठाते हैं कि भारत ने विश्व को क्या दिया और यह बोध कराते हैं कि पाश्चात्य ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ हैंस परंतु भारत में विश्व को ज्ञान प्रणाली दी, विज्ञान के अनेक आयाम दिए । आइंस्टीन ने कहा है कि **"हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं हो सकती थी।"** विज्ञान की विख्यात संस्था ̔ ।छक जिसका पूरा नाम ̔बपमदबम & छवदकनंसपजल है, के मुखपुष्ट पर आपको **ॐ =** उब^2 लिखा दिख जाएगा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्दों में कहें तो रू.

"मैं शंकर का वह क्रोधानल, कर सकता जगती क्षार-क्षार,
. डमरू की वह प्रलय ध्वनि हूँ, जिसमें नचता भीषण संहार,
रणचण्डी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत्त हास,
मैं यम की प्रलंयकर पुकार, जलते मरघट का धुआँधार,
फिर अंतरमन की ज्वाला से, जगती में आग लगादूं मैं,
यदि धधक उठे जल थल अंबर जड़ चेतन हो कैसा विस्मय?
हिंदू तन मन हिंदू जीवन रग-रग हिंदू मेरा परिचयए
शक्ति इतनी कि विश्व का संहार कर सकते हैं परंतु, विश्व को देना क्या चाहते हैं-
मैं अखिल विश्व का गुरु महान, देता विद्या का अमर दानए
मैने दिखलाया मुक्ति मार्ग, मैने सिखलाया ब्रह्म ज्ञान,
मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर,
मानव के मन का अंधकार क्या कभी सामने रहा ठहर?
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर, सागर के जल में छहर-छहर,
इस कोने से उस कोने तक कर सकता जगती सौरभमय,
हिंदू तन मन हिंदू जीवन रग-रग हिंदू मेरा परिचय"

भारतवर्ष के ज्ञान व संस्कृति का प्रभाव विश्व पर अनादि काल से रहा है और सदैव इसकी उपादेयता बनी रहेगी।

संदर्भ सूची :-

1. https://youtu.be/Y_PCF7qQyHk?si=g6DrZh3EdihCUnJT
   https://g.co/kgs/vb2Eiuf
   https://www.youtube.com/live/ey0IX9INJ0E?si=IV0KSn_5JNJwoU0d
2. https://www.nationalistonline.com/the-growing-influence-of-indian-culture-in-the-world/